'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक १०५ | वाराणसी, मंगलवार, १५ सितम्बर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

अनंतनाग (कश्मीर) १८-८-'५९

गरीबों के साथ समरस होने में ही आनंद है

आठ साल से हमारी जियारत, यात्रा चल रही है। जहाँ-जहाँ इन्सान बसा है, वहाँ-वहाँ हमारी जियारत है। आप सब लोग मेरे देवता हैं।

हमारी जियारत

आप देख रहे हैं कि मैं सामान से लदा हूँ। सामान ढोनेवाली अक्ल मुझे कश्मीर में सूझी। कश्मीर की देवता शारदा है, जो इल्म की देवता है। वही ऐसी अक्ल और इल्म देती है। सैलाब की वजह से जब हम मंडी राजपुरा में रुके, तब पीरपंजाल लाँघकर कश्मीर में आनेवाले थे। हमने तय किया था कि हम पैदल ही जायँगे, घोड़े पर नहीं जायँगे। इस उम्र में साढ़े तेरह हजार फुट का पीरपंजाल लाँघना हमारे लिए मुश्किल था। हमने पैदल चलकर वह लाँघा, लेकिन हमारा सारा सामान दूसरे भाइयों के सिर पर था। आठ साल तक हमारा सामान लारी, जीप वगैरह में जाता था। आज भी कुछ सामान लारी में है। लेकिन जब हमने दूसरे भाइयों को सामान उठाते हुए देखा, तब हमें लगा कि अपने सामान का कुछ हिस्सा हम ही क्यों न उठा लें? तभी से हमने थोड़ा-थोड़ा सामान उठाना शुरू किया है। जब से इस तरह सामान उठाना शुरू किया, तब से हमें बहुत खुशी, मस्ती मालूम हो रही है, क्योंकि तब से हमारा दिल मजदूरों के दिल के साथ घुल-मिल गया, यही है हमारी जियारत।

गरीबों के सिर पर

दुनिया का कुल बोझ मजदूरों ने ही उठाया है। क्या हिंदुस्तान में, क्या एशिया में और क्या दुनिया में—कुल-का-कुल बोझ मजदूर ही ढो रहे हैं। यह सुना गया है कि एक साँप है, जिसके सिर पर यह धरती है। उसे संस्कृत में अनंतनाग कहते हैं। कुल धरती का बोझ उठानेवाला अनंतनाग है। अनंतनाग याने बेजमीन मजदूर! हम उसीके साथ मिल-जुल जाना चाहते हैं, उसीकी खिदमत करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हम और वह एक हो जायँ। जब से हमने सिर पर बोझ उठाना शुरू किया, तब से पता चला कि गरीबों के सिर पर कितना बोझ है। हम लोग उनपर इतना बोझ लादते हैं कि उनकी पीठ झुक जाती है। फिर भी हम महसूस नहीं करते कि उनपर हम कोई जुल्म कर रहे हैं। ज्यादती कर रहे हैं। जब तक हम गरीबों की जिंदगी के साथ अपना मेल नहीं मिलाते, तब तक उनके दुःख का अंदाजा हमें नहीं लगेगा और हमारे दिल में उनके लिए हमदर्दी भी पैदा नहीं होगी। जब तक हमारा बोझ उनपर है, तब तक हम जुल्म करते हैं और हमारी गिनती जालिमों में होती है। हमें इसका जवाब अल्लाह के सामने देना पड़ेगा। हमने अपना बोझ उठाना शुरू किया, उससे जिस्म को तो तकलीफ होती है, लेकिन रूह को खुशी होती है। गरीब भाई हमारे साथी हैं, हमारे ही कुनबे के लोग हैं, इस खयाल से दिल में सुकून पैदा होता है।

अल्लाह एक है : इन्सान एक है

हम यहाँ दिल के साथ दिल जोड़ने के लिए आये हैं। हम चाहते हैं कि दुनिया में जो तरह-तरह के तफरके हैं, वे न रहें। इन्सान एक बने और नेक बने। कुरानशरीफ में कहा है कि अल्लाह एक है। वैसे ही हम जाहिर करना चाहते हैं कि इन्सान एक है। अल्लाह एक है, इसीमें से यह चीज निकलती है कि 'इन्सान एक हैं।' इन्सान में फर्क पड़े, ऐसी कोई चीज हमें नहीं करनी चाहिए। चाहे यह फर्क मजहब की वजह से पड़ता हो, किताब की वजह से पड़ता हो, जबान की वजह से पड़ता हो या जिस किसी भी वजह से पड़ता हो इससे समाज के टुकड़े होते हैं।

आज दुनिया में छोटे-छोटे मसले पैदा किये जा रहे हैं। कश्मीर, केरल, कोरिया, तिब्बत जैसे पुराने मसले तो हल नहीं ही हुए, नये-नये मसलें पैदा होते जा रहे हैं। इसलिए अगर हम चाहते हैं कि हम इन सब मसलों से बरी हो जायँ तो हमें महसूस करना चाहिए कि इन्सान एक है। इन्सान एक है, इसीलिए हम कहते हैं 'हमारा कौल—जय जगत्।" हम सब दुनिया के हैं और दुनिया हमारी है। हमने 'नारा' नहीं कहा 'कौल' कहा, क्योंकि नारे एक-दूसरे के साथ टकराते हैं और दुनिया में झगड़े पैदा करने में कामयाब होते हैं।

www.vinoba.in

प्रार्थना-प्रवचन

बरोत (कश्मीर) २९-८-'५९

देना-इन्सानियत की माँग है, रूहानियत की माँग है

बड़ी खुशी की बात है कि आज यहाँ लोगों ने काम किया है और कुछ दान मिला है। पहले यह खयाल नहीं था कि जमीन मिलेगी। लोग कहते थे कि इस पहाड़ी मुल्क में जमीन कहाँसे मिलेगी? लेकिन कोशिश करने पर तजुरबा हुआ कि जमीन मिलती है। मैंने कश्मीर में जो फिजा देखी, वह इस काम के लिए बड़ी माकूल है। यहाँके लोगों के दिल वसी, उदार हैं। वसी दिलवाले ही तरक्की कर सकते हैं, छोटे दिलवाले नहीं। यह ऋषि-मुनियों का देश है, यहाँ हमें पुराने जमाने से नसीहत मिली है। आज एक बहन ने जमीन दी है। उसने किसी अखबार में बाबा की एक फोटो देखी, जिसमें बाबा किसीका हाथ पकड़कर पहाड़ उतर रहा था। यह देखकर उस बहन को लगा कि बाबा कश्मीर के लोगों के लिए इतनी तकलीफ उठा रहा है तो हमें भी कुछ देना चाहिए। इसीलिए उसने अपने खाविंद से दान देने के लिए कहा।

व्यापक दृष्टि से सोचें

तीन महीने से ज्यादा अर्सा हुआ; हमारा दौरा कश्मीर में चल रहा है। यहाँपर लोगों ने अपने-अपने मुतालबे (माँगें) सामने रखे और दिल खोलकर बातें कीं। शरणार्थी, हरिजन, एक्स सोलजर्स और भी कई भाई हमारे पास आये और उन्होंने जमीन माँगी। वे माँगते भी बहुत थोड़ी हैं। कहते हैं कि ४-५ कनाल मिल जाय तो अच्छा है। हमने हर कौमवालों से कहा, तुम अपनी-अपनी बात मत सोचो। समाज का एक-एक टुकड़ा लेकर सोचोगे तो मसला हल नहीं होगा। कुल जिस्म कमजोर हुई हो तो यही सोचना चाहिए कि जिस्म की ताकत कैसे बढ़े? हाथ और पाँव अपने-अपने बारे में ही सोचेंगे कि मैं कमजोर हूँ, मुझे ताकत मिलनी चाहिए तो हाथ या पाँव को अलग-अलग ताकत नहीं पहुँचायी जायगी। जिस्म को ताकत पहुँचायी जाय तो हाथ और पाँव को मिल ही जायगी। इसलिए शरणार्थी, हरिजन वगैरह सबके सवाल हम अलग-अलग सोचेंगे तो मसले हल नहीं होंगे। हमें सोचना यह चाहिए कि हमारा गाँव एक जमात, एक कुनबा है और हमें गाँव का मसला हल करना है। उसके लिए गाँव में जमीन की शख्सी मिलकियत मिटानी होगी। शख्सी काश्त चले, लेकिन मिलकियत सारे गाँव की हो। गाँव में हिंदू, मुसलमान, सिख, गुजर, बकरवाल आदि जिस किसी किस्म के लोग हैं, सभी मिलकर हमारी एक जमात हैं, यों सोचकर मसलों की तरफ देखेंगे तो मसले हल होंगे। सभीके मसले हल करने के लिए हमने भूदान से शुरुआत की, लेकिन आखिर में हम ग्रामदान तक पहुँच गये हैं।

एक होकर रहें

हम कहते हैं कि मालकियत गाँव की बनाकर सबको काश्त करने के लिए थोड़ी-थोड़ी जमीन बाँट दी जाय। दस साल के बाद सबकी राय से फिर से बँटवारा हो। सालभर में जो फसल हो, उसका थोड़ा हिस्सा हर कोई समाज के लिए दान दे। उस दान में से बेवाओं का, गरीबों का और दूसरों का काम चले। हर गाँव के लिए शांति-सैनिक के तौर पर एक कारकून खड़ा किया जाय। हर ५००० लोगों के लिए एक शांति-सैनिक जरूरी है। इन कारकूनों के लिए हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाय। वे कारकून गैरजानिबदार और इन्सान की खिदमत इन्सान के नाते करनेवाले हों। गाँव की एक स्टेट बनायी जाय। सब गाँववाले मिलकर सोचें कि गाँव में दस्तकारियाँ कैसे बढ़ायी जायँ, गाँव के कपड़े के लिए कितनी कपास बोयी जाय, कितने चर्खे चलाये जायँ, गाँव के पानी का इन्तजाम कैसे हो, गाँव के झगड़ों का फैसला गाँव में ही किस तरह हो, गाँव में बाहर से कौन-सी चीजें आनी चाहिए, कौन-सी चीजें बाहर भेजनी हैं और जो चीजें गाँव में पैदा की जा सकती हैं, वे कैसे पैदा की जायँ? कैसे गाँव को साफ-सुथरा रखा जाय? इस तरह जितने भी प्रश्न हों, उनका समाधान यही है कि कुल कारोबार गाँववाले खुद करें। गाँव का मन्सूबा गाँववाले ही अपने दिमाग से बनायें, देहलीवाले या श्रीनगरवाले नहीं। दिल्ली, श्रीनगरवाले भी गाँव को जो मदद दे सकते हों, दें। गाँव में सब मिल-जुलकर प्रेम से काम करें। छोटा-बड़ा यह तफरका, भेद न रहे। हिंदू, मुसलमान, सिख सारे एक जमात होकर रहें। अल्लाह की इबादत के लिए भी सब इकट्ठे हो सकते हैं और खामोश होकर, अपना-अपना प्यारा नाम ले सकते हैं। हम सब एक हैं, ऐसा पक्का निश्चय करें और नेक राह पर चलें। गाँव की इक्तसादी और अखलाखी हालत मजबूत करने के लिए यही एक रास्ता है।

दुनिया एक बनानी है

आज मुझसे 'नेशनल कॉन्फरेन्सवाले' और 'महाज रायशुमारी' (प्लेबिसाइट फ्रन्ट) वाले मिले थे। उन्होंने मुझसे बहुत प्यार से बातें कीं। रायशुमारीवालों ने दिल खोलकर बातें कीं। मुझे इसकी बहुत खुशी है कि वे महसूस करते हैं कि 'इस शख्स के सामने दिल खोलने में जरा भी खतरा नहीं है, यह शख्स हमारा दोस्त है। इसके साथ हम दोस्ताना ढंग से बातें कर सकते हैं, यह हमें सही सलाह देगा।'

मैंने उनसे कहा कि साइन्स के जमाने में कौमें, मुल्क नजदीक आ रहे हैं और एक-दूसरे को एक-दूसरे के बारे में दिलचस्पी पैदा हो रही है। इस हालत में मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत से ही हल होंगे। उन्होंने मेरी इस बात को तसलीम किया। मैंने उनसे कहा कि सियासी मसलों को छोड़ दो और गाँव को एक बनाने में, गाँव की एक स्टेट बनाने के काम में लगो। आखिरी सूरत—जो बहुत दूर की नहीं, बल्कि नजदीक की ही है—में इधर गाँव की स्टेट, ग्राम-स्वराज्य रहेगा, जो बुनियाद होगी और उधर दुनिया की स्टेट होगी। बाकी सूबे, मुल्क वगैरह जो बीच की कड़ियाँ होंगी, वे ग्रामस्वराज्य और दुनिया की हुकूमत को जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। सारी इक्तसादी और असली ताकत गाँव की हुकूमत के हाथ में रहेगी और अखलाखी ताकत दुनिया के मरकज (केन्द्र) में रहेगी। बाकी देहली, श्रीनगर, ये सब सिर्फ जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। जिसे हम मुल्क कहते हैं, वे बनेंगे सूबे। जैसे आज एक सूबे का आदमी बेरोक-टोक दूसरे सूबे में जा सकता है, वैसे ही हर मुल्क का आदमी बेरोक-टोक दूसरे देश में आ-जा सकेगा। हर मुल्क का बाशिंदा, दुनिया का बाशिंदा, सिटीझन होगा। यह सब होनेवाला है, हमें यह करना है। अगर हम ऐसा नहीं करते हैं तो दुनिया का खात्मा होनेवाला है। अब या तो दुनिया प्यार से एक बननेवाली है, जिसकी बुनियाद ग्रामराज्य होगा

www.vinoba.in

और शिखर दुनिया का मरकज़ होगा या दुनिया मिटनेवाली है। यह हम ध्यान में नहीं लेंगे, छोटी-छोटी सियासत ही मन में रखेंगे तो समझना चाहिए कि इस जमाने में हम बिलकुल गये-बीते, पुराने जमाने के लोग साबित होंगे।

यही बात मैं सबको दिल खोलकर सुनाता हूँ और हर पार्टी-वालों को खूब फटकारता भी हूँ। लेकिन वे समझते हैं कि इस शख्स के मन में अपने लिए प्यार है, इसलिए इसकी फटकार में भी प्यार ही भरा है। यही बात मैंने आज रायशुमारीवालों से कही। अभी तक ऐसा कोई शख्स यहाँ नहीं आया, जो 'हार्ट टू हार्ट टाक' (दिल खोलकर बातें) करता हो, धीरज से समझाता हो, सब कुछ सुनाता हो। रायशुमारीवालों ने भी यही महसूस किया। उनका प्यार देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई।

हमें दो काम करने हैं

हमें दो काम करने हैं। १. रूहानियत से मसले हल करने की तरकीब ढूँढ़नी है और दुनिया का रूहानी इन्तजाम करना है। जिसमें इधर गाँव की स्टेट और दुनिया की स्टेट हो और बाकी सब बीच की जोड़नेवाली कड़ियाँ हो जायँ। २. इक्तसादी (आर्थिक) हालत के बारे में अलग-अलग जमात या कौम के लिए नहीं सोचना चाहिए। किन्तु कुल जमात के बारे में, गाँव के बारे में सोचना चाहिए। इसलिए मैं शरणार्थी, हरिजन वगैरह लोगों से कहता हूँ कि तुम यह मत सोचो कि हम शरणार्थी हैं या हरिजन, बल्कि यह समझो कि हम सब एक हैं। जैसे गुरु नानक ने कहा था 'आयी पंथी सकल जमाती' कुल दुनिया में हमारी एक ही जमात है, वैसे ही बरतना सीखो और छोटे-छोटे मुतालबे, छोटे-छोटे खयाल छोड़ दो।

तोबा! तोबा! भगवान इन लीडरों से बचाये

मुझे यह कहने में बड़ा दुःख होता है कि पंजाब के सिखों की ताकत टूट रही है। गुरुद्वारे की भी स्टेट बन गयी है और उसे हथियाने की कोशिश चल रही है। जम्हूरियत का एक ढकोसला, ढोंग चल रहा है, जिसकी वजह से गुरुद्वारे में भी चुनाव होंगे और उससे फैसले होंगे! प्यारे भाइयों, क्या कभी धर्म में भी चुनाव हुए हैं? क्या गुरु नानक को मेजॉरिटी ने चुना था? सिख विचार जिसके दिमाग को सूझा, क्या उसे ५१ प्रतिशत लोगों ने वोट दिया था और ४९ उसके मुख्तलिफ गये थे? ये सियासी पचड़े, सियासत में भी तकलीफ दे रहे हैं, इसलिए मैं उन्हें वहाँसे हटाने की बात कर रहा हूँ। क्या वे धर्म में भी आने चाहिए? मैंने सिख भाइयों से कहा है कि आप गुरुद्वारे में जाते समय सियासत के जूते बाहर छोड़कर जाइये। लेकिन आज तो सब लोग सियासी जूते ही लेकर गुरुद्वारे में जा रहे हैं।

तोबा! तोबा!! भगवान इन लीडरों से दुनिया को बचाये। दुनियाभर के लीडरों की एक जमात बन रही है, जो दुनिया को बिलकुल गुमराह कर रही है।

अभी पंजाब में जो चल रहा है, उससे मेरे दिलको बहुत दुःख होता है। वह धर्म को ऊँचा ले जाने का रास्ता नहीं, बल्कि नीचे गिराने का रास्ता है। अब तो हमें यह करना चाहिए कि सब जमातें इकट्ठा बैठकर भगवान की इबादत करें। मगर आज सिखों में ही दो टुकड़े हो रहे हैं और गुरुद्वारे तक में कत्ल होती है, यह सब आप क्या सुन रहे हैं?

कश्मीर में शिया लोग और कश्मीरी पंडित मेरे पास आकर शिकायत करने लगे कि हमें यह हक हासिल नहीं, वह हक हासिल नहीं, हमारी हालत गिरी हुई है। मैंने पंडितों से कहा कि तुम पंडित हो, पंडितों की हालत कभी गिरी हुई हो सकती है? अगर हम दरअसल में पंडित हैं तो एक पंडित एक बाजू और दूसरे दस हजार लोग दूसरी बाजू हों तो भी पंडित को कोई पर्वाह नहीं, लेकिन दिमाग में अक्ल न हो और सिर्फ नाम के ही पंडित हों तो कैसे चलेगा? मैंने यह सुनाया तो वे दुःखी हो गये। मैंने कहा कि दुःखी मत होओ, तुम बिलकुल महफूज (सुरक्षित) हो, यहाँ अगर तुम सबकी खिदमत करने में लग जाते हो तो तुम्हें किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी, फिर तुम जो माँगोगे, वह मिलेगा ही।

सियासत मरनेवाली है

इस साइन्स के जमाने में 'मेरी-मेरी' मत कहो, 'हमारी' कहो। जो 'मेरी-मेरी' कहेगा, उसकी ताकत टूटेगी। 'हमारी' कहनेवाले की ताकत बढ़ेगी। रूहानियत पुराने जमाने से ही यह कह रही है कि 'मेरी-मेरी' छोड़ो और 'हमारी' कहो। अब साइन्स भी वही बात कह रहा है। जहाँ रूहानियत और साइन्स दोनों एक होकर यह बात कह रहे हैं, वहाँ 'मेरी मेरी' कहनेवाला शख्स कैसे टिकेगा? कोई भी शख्स बहाव के खिलाफ तैरकर कहाँ जा सकेगा? दो-चार हाथ तैरेगा, लेकिन फिर डूब जायगा। इसलिए समझना चाहिए कि अब जमाना सियासत का नहीं, बल्कि रूहानियत और साइन्स का मिला-जुला जमाना है।

अब सियासत के हाथ में कुछ भी शक्ति नहीं रहेगी। यह सियासत मरने की तैयारी में है। इस समय यह मरते-मरते छटपटाहट कर रही है। हिन्दुस्तान-पाकिस्तान, तिब्बत, कोरिया, बर्मा, ईराक, मिस्र आदि जो जगह-जगह उलझनें पैदा हो रही हैं, वह सब सियासत की आखिरी छटपटाहट है। सियासत मरनेवाली है, इसीलिए ये सब उलझनें जारी हैं। अब जो कोई सियासत टिकाये रखने की कोशिश करेगा, वह भी उसके साथ ही मरनेवाला है।

इन्जिन साइन्स का, पटरी रूहानियत की

कुछ लोगों का खयाल है कि बाबा बिलकुल पुराने दकियानूस औजार लेकर गाँव में काम करना चाहता है। लेकिन यह बिलकुल गलत बात है! मैं तो चाहता हूँ कि गाँव में 'एटॉमिक एनर्जी' आये, जो विकेन्द्रित हो। मैं उसकी इन्तजार में हूँ। मुझे साइन्स का कतई डर नहीं है। मैं चाहता हूँ कि साइन्स का इंजिन जोरदार चले। हमारी जिंदगी की ट्रेन बहुत रफ्तार से बढ़े, लेकिन उसके लिए पटरी रूहानियत की हो। इंजिन साइन्स का हो, लेकिन ट्रेन किस पटरी पर चले, यह इंजिन नहीं बतायेगा, यह अक्ल उसे नहीं है। इसलिए मैं साइन्स के इन्जिन के साथ रूहानियत की पटरी चाहता हूँ।

हरएक शख्स को देना चाहिए, इसलिए जब तक हरएक शख्स कुछ न कुछ न दे दे, तब तक आप आराम मत लो। आप यह समझो कि हर शख्स देनेवाला है। जिसने आज नहीं दिया, उसने इसीलिए नहीं दिया कि उसे कल देना है। जो शख्स आज नहीं मरा, वह इसीलिए नहीं मरा, क्योंकि वह कल मरनेवाला है। जो कल नहीं मरेगा, वह इसीलिए नहीं मरेगा, क्योंकि उसे परसों मरना है। हर शख्श मरनेवाला है, यह तय है। वैसे ही यह तय है कि हर शख्स देनेवाला है। हाँ, हमें सबके पास पहुँचना जरूर चाहिए। हम प्यार से माँगेंगे तो सभी देंगे। जो दे, उसे प्यार से सलाम करें, जो न दे उसे भी करें। क्योंकि आज नहीं कल ही सही, लेकिन हरएक शख्स देनेवाला है ही। क्योंकि इन्सानियत, रूहानियत और साइन्स की यही माँग है। ◆◆◆

www.vinoba.in

स्वागत-प्रवचन मार्तंड (कश्मीर) १०-८-'५९

मैं जनता-जनार्दन के दर्शनों के लिए यात्रा कर रहा हूँ

हमारी यात्रा आठ साल से चल रही है। 'मार्तंड' एक यात्रा का स्थान है। यहाँ 'अमरनाथ' जानेवाले यात्री ठहरते हैं। अक्सर लोग काशी, बद्रीकेदार, अमरनाथ, रामेश्वर की यात्रा करते हैं। हमारी यात्रा उन स्थानों में भी होती है। लेकिन हिंदुस्तान में जितने गाँव हैं, जहाँ हमारे भाई रहते हैं, वे सब हमारे लिए यात्रास्थान हैं। हम उन सबके दर्शनों के लिए यात्रा कर रहे हैं।

मानव-देह ही मंदिर है

हमें यहाँका मंदिर* बताया जायगा, जो तोड़ा गया है। लेकिन हम सिर्फ उसीको मंदिर नहीं मानते। हम मानते हैं कि अपना देह, जिस्म भी एक मंदिर ही है, जिसमें भगवान विराजमान हैं। इससे बेहतर मंदिर हमने नहीं देखा। हमने बहुत बड़े-बड़े मंदिर देखे हैं। मदुरा में मीनाक्षी का आलीशान खूबसूरत मंदिर है, जिसमें हज़ार खम्भोंवाला मंडप है, लेकिन उन-सब मंदिरों से ज्यादा खूबसूरत परमात्मा का कोई मंदिर है तो यह मनुष्य देह ही है। इसमें जो रोशनी रोशन होती है, वह दूसरे किसीमें नहीं होती। हम तो इसीके दर्शन के लिए घूमते हैं।

यह कैसी भक्ति ?

हम सबको यही बात समझा रहे हैं कि तुम परमात्मा के भक्त बनना चाहते हो तो एक-दूसरे पर प्यार करो। इन्सान का इन्सान पर प्यार न हो, अदावट हो तो अल्लाह उसकी इबादत हर्गिज कबूल नहीं करेगा। वह कहेगा कि तुम मेरे भक्त कहलाते हो तो एक-दूसरे पर प्यार क्यों नहीं करते ? अल्लाह 'अलू गैब' अव्यक्त है, जो दीखता नहीं, उसपर तुम प्यार करने का दावा करते हो, लेकिन जिनको देखते हो, जो अल्लाह की ही संतान हैं, उनपर प्यार नहीं करते हो तो वह कैसी भक्ति हुई ? हम कहते हैं कि तुम्हारे देह-मंदिर में जो भगवान विराजमान हैं, उनकी तुम पूजा करो। दुनिया में जो इन्सान है, फिर वह चाहे जिस मजहब का, जाति का, जबान का या सूबे का हो, उसपर हमारा उतना ही प्यार होना चाहिए, जितना हमारे इस जिस्म पर है। एक-दूसरे पर प्यार करने के लिए ही हम कहते हैं कि जमीन की मिलकियत मिटाओ, जमीन सबकी बनाओ, हम जितने भी काम करते हैं, सब प्यार बढ़ाने के लिए। अल्लाह की इबादत के लिए करते हैं।

चलने का सबब

हमारे परमात्मा हर जगह मौजूद हैं, इसलिए हम पैदल यात्रा करते हैं। एक भाई ने हमसे पूछा कि आप इस हवाई-जहाज, रेल, मोटर के जमाने में पैदल क्यों घूमते हो ? हमने उसे जवाब देते हुए मजाक में कहा कि हम हवाई जहाज में घूमते तो हमें हवा ही मिलती, जमीन नहीं। लेकिन उसका असली जवाब यह है कि हम यात्रा के लिए निकले हैं। इसलिए हम घोड़े पर बैठेंगे तो सारा सवाब (पुण्य) घोड़े को ही मिलेगा, हमको नहीं। पुण्य हमें मिले, इसलिए हम पैदल चलते हैं। यह अक्ल हमें आठ साल पहले सूझी थी, लेकिन कश्मीर में हमें और एक अक्ल सूझी कि हमें अपना निजी सामान भी खुद उठाना चाहिए। हाँ, किताबें वगैरह दूसरी चीजें मोटर से जा सकती हैं। आप हमें कन्धे पर बोझ उठाये हुए देख रहे हैं, जो हम पहले नहीं उठाते थे। इस तरह इस बुढ़ापे में हमें नये-नये विचार सूझते हैं, हम नया-नया बोझ उठाते हैं। लेकिन जबसे हमने यह बोझ उठाया, तबसे हमें आराम महसूस हुआ। सरस्वती को 'कश्मीरपुरवासिनी शारदा' कहा जाता है। इसलिए कश्मीर में ही उसने हमें यह अक्ल सुझायी कि हम अपना सामान खुद ढोयें। ऐसा करने से ही सच्ची यात्रा होगी। यह बोझ उठाने से हमारी बुद्धि पर जो बोझ था, वह हट गया और हमें नये विचार सूझे।

हम सवाब बाँटना चाहते हैं

अब हमें इस यात्रा का पूरा सवाब मिलेगा। लेकिन हम वह सवाब लेना नहीं चाहते हैं, आप सबमें बाँटना चाहते हैं। पाप और पुण्य दोनों बाँटना चाहते हैं। सवाब का भी बोझ उठाना नहीं चाहते। जो भाई दान देंगे, उन्हें हम यह सवाब खैरात में बाँट देंगे और दान लेनेवालों को भी बाँटेंगे। सवाब के हम तीन हिस्से करेंगे। उन्हें हम दान देनेवालों में, लेनेवालों में और दिलानेवालों में बाँट देंगे।

मार्तण्डवालों से

यह 'मार्तण्ड' है। यहाँ 'सूर्य-मन्दिर' है। सूर्य नारायण दुनिया को रौशन करते हैं। इसलिए यहाँसे दुनिया में रौशनी फैलनी चाहिए। 'मार्तण्ड' में ऐसा कोई अभागा न रहे, जिसने दान न दिया हो। अगर हर घरवाला कुछ न कुछ देगा तो 'मार्तण्ड' से कश्मीर में, हिन्दुस्तान में और दुनिया में प्यार की रौशनी फैलेगी।

मेरी यह जो यात्रा आठ साल से चल रही है, वह इसीलिए कि लोग प्रेम से दें। हमारा यही काम है कि हम जनता के पास प्यार का पैगाम लेकर पहुँचते हैं और उसे दान देने के लिए प्रेरित करते हैं। जनता-जनार्दन का दर्शन करना और उसे विचार समझाना, यही मेरी जियारत, यात्रा का मकसद है। ◆◆◆

*'मार्तंड' एक प्राचीन स्थान है, जहाँपर आठवीं शताब्दि में ललिता दिव्य राजा ने एक विशाल सूर्य-मंदिर बनाया था, जिसे सोलहवीं शताब्दि में 'बुतशिकंद' सिकंदर ने तोड़ा। मार्तंड में उसके खंडहर अभी भी मौजूद हैं।

अनुक्रम

१. गरीबों के साथ समरस होने में ही आनंद है.
अनंतनाग १८ अगस्त '५९ पृष्ठ ६५९
२. देना इन्सानियत की माँग है, रूहानियत की माँग है...
बरीत २९ अगस्त '५९ ,, ६६०
३. मैं जनता-जनार्दन के दर्शनों के लिए यात्रा कर रहा हूं.
मार्तण्ड १० अगस्त '५९ ,, ६६२

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in